

डॉ. डेविड हॉवर्ड, जोशुआ-रूथ, सत्र 29 न्यायाधीश 17-18, पहला परिशिष्ट, मीका और लेवी

© 2024 डेविड हॉवर्ड और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेविड हॉवर्ड रूथ के माध्यम से जोशुआ की पुस्तकों पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 29, न्यायाधीश 17-18, पहला परिशिष्ट, मीका और लेवी है।

पुनः नमस्कार और हम न्यायाधीशों की पुस्तक पर अपनी चर्चा जारी रख रहे हैं और अब हम होमस्ट्रेच पर हैं।

हम पुस्तक के अंतिम पाँच अध्यायों, अध्याय 17 से 21 को देखने जा रहे हैं। हम इसे दो खंडों में करेंगे, सबसे तुरंत अभी अध्याय 17 और 18 और फिर 19 से 21। वे दो अलग-अलग कहानियाँ हैं लेकिन सिर्फ मंच तैयार करने के लिए, उनके बीच की समानताएं, हमने डाउनहिल के प्रकार का उल्लेख किया है भूमि में नैतिक और आध्यात्मिक स्थितियों का चक्र और हम निश्चित रूप से इसे अंतिम न्यायाधीश सैमसन की कहानी में फलित होते हुए देखते हैं।

इन अंतिम कहानियों में, 17 और 18 और फिर 19 और 21, हमारे पास और कोई जज नहीं है। तो, ये अलग-अलग लोगों के बारे में कहानियाँ हैं। और इस बात के प्रमाण हैं कि यहाँ की कहानियाँ कालानुक्रमिक रूप से उस अवधि से पहले घटित हुई होंगी, मान लीजिए कि सैमसन रहते थे।

इसलिए, यह कालानुक्रमिक रूप से अनुचित हो सकता है। लेकिन मुझे लगता है कि अगर ऐसा मामला है, तो भी मुझे लगता है, न्यायाधीशों की पुस्तक के लेखक जब यह सब कहा और किया गया है, तो लेखक यह मामला बनाना चाहते थे कि इज़राइल इस नैतिक धर्मत्याग को झेल रहा था और एक ईश्वरीय धर्म की आवश्यकता थी राजा आगे बढ़ रहा है। और यही वह प्रमुख बिंदु होगा जिसे मैं जजेज के लेखक को व्यक्त करने का प्रयास करते हुए देखूंगा।

लेखक ने इन कहानियों को पुस्तक के अंत में रखने का निर्णय लिया क्योंकि ये पूरी पुस्तक की सबसे घिनौनी और घटिया कहानियों में से कुछ हैं। और इसलिए बस उस बिंदु को स्पष्ट करने के लिए, जिस तरह से किताब को एक साहित्यिक दस्तावेज़ के रूप में पढ़ा जाता है, यह एक तरह से नादिर है, किताब का सबसे निचला बिंदु। मैं अपने छात्रों से कहता हूँ कि जजेज की किताब पढ़ने के बाद मुझे अक्सर ऐसा महसूस होता है कि मुझे स्नान करने की जरूरत है और निश्चित रूप से ये अंतिम अध्याय इसमें योगदान करते हैं।

यह एक खंड है जहाँ चार बार हमें बताया गया है कि इज़राइल में कोई राजा नहीं है, अध्याय 17, श्लोक 6, 18, श्लोक 1, 19, श्लोक 1, और 21, श्लोक 5। और उनमें से पहले और आखिरी उदाहरण में, हमें यह भी बताया गया है कि इज़राइल में कोई राजा नहीं है। मुझे खेद है, हर कोई अपनी नज़रों में सही था। तो, चार बार इज़राइल में कोई राजा नहीं था, पहली और आखिरी बार, हर किसी ने अपनी नज़र में सही किया।

और इसका दूसरा पक्ष यह है कि उन्हें प्रभु की दृष्टि में सही काम करना चाहिए था और यदि कोई धर्मात्मा राजा होता, तो संभावना यह है कि वह धर्मात्मा राजा एक नेता होता, लोगों को प्रभु की ओर ले जाने में एक आदर्श होता इस विकेन्द्रीकृत पूजा के बजाय, हर कोई वही कर रहा है जो उसे अच्छा लगता है और जो वह चाहता है। अध्याय 2 से 16 में, हम देखते हैं कि हम इज़राइल के लिए बाहरी खतरे कह सकते हैं, जबकि 17 से 21 में संघर्ष इज़राइल के लिए आंतरिक हैं और समस्याएं बाहर से नहीं, बल्कि भीतर से पनप रही हैं। तो वहां भी, बाहरी खतरों को हम कुछ हद तक समझ सकते हैं, लेकिन आप आशा करते हैं कि राष्ट्र में किसी प्रकार की आध्यात्मिक अखंडता होगी, लेकिन अंत में, राष्ट्र अंदर से बाहर, मूल से ही सड़ रहा है।

तो, अध्याय 17 और 18 में, हमारे पास पहला है, कभी-कभी लोग इन्हें पुस्तक का परिशिष्ट कहते हैं। यदि ऐसा है, तो हम इसे पहला परिशिष्ट कहेंगे और यह एक महान धार्मिक भ्रष्टाचार को दर्शाता है और मुख्य पात्र मीका नाम का एक व्यक्ति है, निश्चित रूप से भविष्यवक्ता मीका नहीं जिसके बारे में हमें बाद में, वर्षों बाद बाइबिल में पता चलता है। यह एक अलग आदमी है और वह किसी भी कारण से अपना निजी मंदिर, अपना निजी पूजा स्थल स्थापित करना चाहता है।

वह चाहता है कि एक पुजारी उसका निजी पुजारी हो और फिर वह एक तरह का है, यह दान की जनजाति के बारे में बताता है, जो मूल रूप से, उनकी भूमि यहां समुद्र तट के साथ उन्हें आवंटित की गई थी, लेकिन वे उन्हें बाहर निकालने में सक्षम नहीं थे वहाँ कनानी हैं और इसलिए हम उन्हें भूमि के माध्यम से पलायन करते हुए पाते हैं और यहीं बस गए और जैसे ही वे आते हैं, वे इस मीका से मिलते हैं और उन्हें उस मंदिर का पता चलता है जो उसने बनाया है, जो चीजें उसने इसमें जोड़ी हैं, और उसकी स्वयं के पुजारी और उन्हें पता चला कि वे इसकी लालसा रखते हैं और उन्हें यह पसंद है और इसलिए वे इसे अपने साथ ले जाते हैं और जैसे ही वे उत्तर की ओर पलायन करते हैं, वे उनके द्वारा बनाई गई सभी नक्काशीदार छवियां और उनके पुजारी को ले जाते हैं और वह, निश्चित रूप से, इससे नाखुश हैं, लेकिन वे सभी दानियों के साथ चले गए और यह दानियों की एक दुखद कहानी है क्योंकि हमें अंत में बताया गया है कि ये दानियों के पास ही रहे, ये झूठी पूजा के उपकरण, इसके बाद कई, कई वर्षों तक रहे। तो यह एक तरह से कहानी का संक्षिप्त सारांश है और यह कोई सुखद कहानी नहीं है। तो चलिए शुरू करते हैं अध्याय 17 को देखकर हम देखते हैं कि, सबसे पहले, एक आदमी है जिसका नाम मीका है।

वह देश के मध्य भाग में एप्राइम के पहाड़ी देश से है और उसने अपनी मां से बात की है और कुछ पैसे के बारे में बात की है जो उससे चुराया गया था और वह इसे बहाल करना चाहता है क्योंकि वह वही था जिसने वास्तव में इसे लिया था। इसलिए वह उसे आशीर्वाद देती है और वह उसे पैसे लौटा देता है और वह अपने बेटे के हाथ से इस चांदी को भगवान को समर्पित करने का फैसला करती है और श्लोक 3 के अंत में कहा गया है कि वह एक नक्काशीदार छवि और एक धातु की छवि और नक्काशीदार शब्द बनाने के लिए ऐसा कर रही है। यहां छवि ठीक वही शब्द है जो निर्गमन 20, श्लोक 4 में दस आज्ञाओं में उपयोग किया गया है, जहां यह कहा गया है कि आपको कोई भी नक्काशीदार छवि नहीं बनानी चाहिए, इन देवताओं में से किसी की भी बाहर या ऊपर स्वर्ग में, नीचे की धरती पर किसी भी चीज़ की नक्काशीदार छवि नहीं बनानी चाहिए। , और पृथ्वी के नीचे का जल। तो शुरुआत से ही, यह महिला दोनों दुनियाओं में सर्वश्रेष्ठ पाने की कोशिश करती दिख रही है।

वह भगवान के लिए कुछ करना चाहती है, इस चांदी को भगवान को समर्पित करना, लेकिन वह इसे इस तरह से कर रही है जो पूरी तरह से अनुचित है और अनिवार्य रूप से पूरी तरह से गलत, पापपूर्ण है। मुझे उत्तरी सिनाई में कुटिलेट अजरुद नामक स्थान के निवासियों, नागरिकों की कहानी याद आ रही है। एक अलग खंड में, हमने इज़राइल के अधिकांश इतिहास में इज़राइलियों के समन्वय के बारे में बात की और 1975 में, उत्तरपूर्वी सिनाई, दक्षिणी यहूदा के एक शहर में खोजों की एक बहुत ही शानदार श्रृंखला थी, जहां एक शिलालेख था जिसमें कहा गया था, मैं सामरिया के यहोवा और उसकी अशेरा के कारण तुझे आशीष दे।

और ये इन लोगों की चाहत को दर्शाता है। यदि तुमने उनसे पूछा होता, क्या तुम यहोवा की आराधना करते हो? उन्होंने अवश्य कहा होगा। वास्तव में हमारे यहाँ उसकी तस्वीर है।

वहाँ यहोवा का चित्रण एक बैल के रूप में किया गया था और फिर हमने उसे यहाँ एक पत्नी दी है। इसलिए, वे दोनों दुनियाओं में सर्वश्रेष्ठ पाने की कोशिश कर रहे हैं, जिसमें यहोवा की पूजा भी शामिल है, जिसे हम जानते हैं, बेशक, सच्चा भगवान है, लेकिन वे उसकी पूजा को अन्य चीजों के साथ मिलाना भी चाहते थे। इधर मीका नाम के इस शख्स की मां भी ऐसा ही करना चाह रही हैं।

इसलिए वह उसे पैसे लौटा देता है और वे चांदी लेते हैं और एक नक्काशीदार मूर्ति, एक धातु की मूर्ति बनाते हैं, पद चार, और यह मीका के घर में है। और उसके पास एक मंदिर है, वह वहाँ एक एपोद बनाता है, श्लोक पाँच, देवताओं का एक घर, उसने अपने बेटों में से एक को नियुक्त किया जो उसका पुजारी बन गया। पहले धर्मग्रंथ के अनुसार, वे सभी प्रभु के लिए घृणित हैं।

और अब पहली बार, पुस्तक का लेखक हमें बता रहा है कि उन दिनों, इज़राइल में कोई राजा नहीं था। सभी ने वही किया जो उनकी नजर में सही था। अब यह एक तरह की संपादकीय टिप्पणी है।

यह कुछ इस तरह है मानो लेखक चीजों के कथा प्रवाह पर विराम का बटन लगा रहा है और कह रहा है, मैं इस बारे में एक शब्द कहना चाहता हूँ। अर्थात्, ऐसा इसलिए हो रहा है क्योंकि कोई राजा नहीं है। हर कोई वही कर रहा है जो वह चाहता है।

यह इसका एक प्रमुख उदाहरण है। और फिर, सूक्ष्म बात यह है कि यदि कोई धर्मात्मा राजा होता, तो इस तरह की बात नहीं हो रही होती। तो यह है कहानी का परिचय।

दिलचस्प बात यह है कि श्लोक पाँच में, जब यह कहा गया है कि मीका के पास एक मंदिर था, तो वहाँ शब्द का शाब्दिक अर्थ सिर्फ भगवान का घर है। और यह दिलचस्प है क्योंकि इसी शब्द का प्रयोग अन्य स्थानों पर तम्बू के बारे में बात करने के लिए किया जाता है। हम पाते हैं कि इस प्रकरण के अंत में, अध्याय 18 के अंत में, अध्याय 18 का अंतिम श्लोक कहता है, इसलिए उन्होंने मीका की कार्ड छवि स्थापित की जो उसने बनाई थी, दानवासी ऐसा कर रहे हैं, जब तक कि घर का परमेश्वर शीलो में था।

तो, दूसरे शब्दों में, जब तक तम्बू परमेश्वर का सच्चा घर, शीलो में था, तब तक ऐसा हो रहा था। लेकिन यहाँ, मीका नाम के इस आदमी के पास परमेश्वर का अपना निजी छोटा सा घर है जो उसके लिए एक फंदा बन गया है। तो, श्लोक सात में, हमें एक अन्य चरित्र से परिचित कराया जाता है।

और यह यहूदा के बेथलेहेम का एक जवान पुरुष है, और कहता है, कि मैं लेवी हूँ। अब, यदि आप यहोशू की पुस्तक से याद करते हैं, तो लेवियों के पास कोई जनजातीय क्षेत्र नहीं था, लेकिन उनके पास 48 लेवीय शहर थे, जो पूरे देश में फैले हुए थे, आमतौर पर 12 जनजातियों में से प्रति जनजाति औसतन लगभग चार। वह बेथलेहेम से है, लेकिन बेथलेहेम को लेवीय शहरों की सूची में लेवीय शहरों में से एक के रूप में सूचीबद्ध नहीं किया गया है।

तो, वह बेथलेहेम से है, वह यहूदा में है, लेकिन किसी तरह वह लेवी बन रहा है। तो शायद उसने लेविटिकल शहरों में से किसी एक का हिस्सा बनने के लिए कहीं यात्रा की है। लेकिन ऐसा महसूस होता है कि वह एक तरह से लक्ष्यहीन है, क्योंकि अब आठवें श्लोक में कहा गया है, वह यहूदा के बेथलेहेम शहर से वहाँ रहने के लिए चला गया, जहाँ उसे जगह मिले।

वह बस इतना कह रहा है, मैं एक खुश घुमक्कड़ बनूँगा और अपना बैग पैक करके कहीं एक यूथ हॉस्टल ढूँढ़ूँगा और देखूँगा कि मैं क्या कर सकता हूँ अगर मैं अपना भाग्य बना सकता हूँ या करने के लिए कुछ रोमांचक ढूँढ़ सकता हूँ। और चलते-चलते वह मीका के घर के पास आया, और मीका ने उस से पूछा, कि वह कौन है। वह कहता है कि वह एक लेवी है, और मीका उसे पसंद करेगा, वह इस आदमी को मंदिर और देवताओं और छवियों आदि के अपने पहले से ही बढ़ते संचय में जोड़ना चाहता है।

और वह सोचता है कि उसके साथ उसका अपना निजी पुजारी होना बहुत अच्छा होगा। इसलिए उसने उससे अपने साथ रहने के लिए कहा, श्लोक 10. और उसने कहा कि मैं तुम्हें इसके लिए भुगतान करूँगा।

तो, पद 12, मीका ने लेवी को नियुक्त किया और वह युवक उसका याजक बन गया। और वह मीका के घराने में था. और मीका या तो पूरी तरह से मूर्ख होगा या सच्चे ईश्वर के सच्चे धर्म के बारे में कुछ भी नहीं जानता होगा, क्योंकि अध्याय 17 के अंतिम श्लोक में, वह कहता है, अब मुझे पता है कि यहोवा, प्रभु, मुझे समृद्ध करेगा क्योंकि मेरे पास एक लेवी है पुजारी।

लोगों द्वारा अपने लिए निजी पुजारी रखने के बारे में कानून में कहीं भी कोई प्रावधान नहीं है, उनके द्वारा बनाई गई इन सभी छवियों और उनके द्वारा बनाए गए मंदिर को तो छोड़ ही दें। लेकिन यह, यहाँ विभिन्न प्रकार के धार्मिक तत्वों के मिश्रण का एक और उदाहरण है, और इसका यहाँ कोई फायदा नहीं हो रहा है। अध्याय 18, श्लोक एक, हमें फिर से याद दिलाता है कि इज़राइल में कोई राजा नहीं है, अगर हम भूल गए हों।

और फिर यह कहता है, यह दृश्यों को एक तरह से बदल देता है और यह हमें एक बिल्कुल अलग जगह, डैन जनजाति में ले जाता है। और दान को मूल रूप से समुद्र के पास एक क्षेत्र आवंटित किया गया था। और आइए उस पर एक नजर डालें।

यदि हम यह समझने के लिए यहोशू की पुस्तक की ओर मुड़ें कि दान की जनजाति को कहाँ बसना था। यहोशू अध्याय 19। यहोशू की पुस्तक में अध्याय 18 और 19 में समूह की अंतिम विरासत दान के गोत्र के लिए है।

और वहाँ के शहरों की लिस्ट देता है। और वे मूल रूप से समुद्र तट के ऊपर हैं और नीचे की ओर हैं, फ़िलिस्ती क्षेत्र में नहीं, बल्कि यहाँ तक लंबे समय तक। परन्तु हमें बताया गया है, श्लोक 47, यहोशू 19, श्लोक 47, यह कहता है, जब दान के लोगों का क्षेत्र उनसे हार गया, तो वे किसी तरह वहाँ बसने में सक्षम नहीं थे, वे उन्हें बाहर निकालने में सक्षम नहीं थे कनानियों, और वे स्पष्ट रूप से न केवल कनानियों को बाहर निकालने में सक्षम नहीं थे, बल्कि कनानियों ने उन्हें बाहर निकाल दिया।

इसलिए जब दान के लोगों का क्षेत्र उनसे हार गया, तो दान के लोगों ने चढ़ाई की और लेशेम के विरुद्ध युद्ध किया। उस पर कब्ज़ा करने और तलवार से वार करने के बाद, उन्होंने उस पर कब्ज़ा कर लिया और वहाँ बस गए, और अपने पूर्वज के नाम पर लेशेम दान कहने लगे। खैर, इज़राइल के ऐतिहासिक काल में डैन यहीं पर एक शहर था।

यह अनुच्छेद हमें बताता है कि पिछला नाम लेशेम था। इसलिए वे यहाँ से मध्य पहाड़ी देश के माध्यम से पलायन कर रहे हैं और सुदूर क्षेत्र में पहुंच गए हैं। हम न्यायाधीश अध्याय 18 में उस प्रवास के विवरण के बारे में अधिक सीखते हैं।

लेकिन बस एक तरह से मंच तैयार करने के लिए, वह पृष्ठभूमि है। जोशुआ, जोशुआ की किताब उस प्रवास की कहानी कहती है। न्यायाधीशों की पुस्तक में यहाँ की कहानियों के वर्षों बाद आया होगा।

यहोशू की पुस्तक में उसका लेखन न्यायाधीशों के उस काल के बाद आया होगा, क्योंकि न्यायाधीश 18 हमें उस प्रवास के बारे में अधिक विस्तार से एक कहानी बताता है। तो फिर, इन किताबों का लेखन किताबों की घटनाओं के तुरंत बाद नहीं हुआ होगा। लेकिन अगर हम इन शब्दों को लिखने के लिए प्रेरित करने वाले ईश्वर की पवित्र आत्मा के विचार को समझते हैं और स्वीकार करते हैं, तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि घटनाओं के लिखे जाने के कितने समय बाद, वे अभी भी सटीक रूप से दर्ज किए गए होंगे।

तो, आइए न्यायाधीश अध्याय 18 पर वापस जाएँ और देखें कि दान जनजाति के साथ क्या हो रहा है। तो, पद 18 हमें बताता है कि उन दिनों में दान के लोगों का गोत्र अपने रहने के लिए एक विरासत की तलाश में था। क्योंकि उस समय तक, इस्राएल के गोत्र के बीच से कोई विरासत उनके हिस्से में नहीं आई थी।

अब यहोशू और अन्य लोगों के अधीन यह उनका एक हिस्सा था, अध्याय 19, यहोशू। लेकिन जाहिरा तौर पर वे काफी अस्थिर हैं फिर भी वे शूरवीरों के राजा को बाहर निकालने में सक्षम नहीं हैं। यह जोशुआ के अध्याय 19 की कहानी से पहले हो रहा है जिसमें बताया गया है कि वास्तव में उन्हें उत्तर की ओर जाने के लिए मजबूर होना पड़ा।

तो यह हमें अधिक विवरण बताता है। तो श्लोक 2 और निम्नलिखित में कहा गया है कि दान के लोगों ने भूमि का पता लगाने और श्लोक 2 में बसने के लिए जगह ढूंढने के लिए पांच सक्षम लोगों को भेजा। इसलिए वे साथ आए और आप क्या जानते हैं, अंत में उनका सामना मीका से हुआ एप्रायम का पहाड़ी देश देश के मध्य भाग में था, और वे वहीं रहे। और इस प्रक्रिया में, निस्संदेह, वे युवा लेवी से मिलते हैं।

और जाहिर तौर पर पहले भी कुछ संपर्क हुआ था। हम इसके बारे में नहीं जानते कि यह क्या था, लेकिन श्लोक 3 में कहा गया है कि उन्होंने युवा लेवी की आवाज पहचान ली और कहा, तुम्हें यहां कौन लाया? आप यहां पर क्या कर रहे हैं? तो, यह लेवी हो सकता है, हमने पहले देखा है, वह अपने भाग्य का पता लगाने के लिए, रोमांच की तलाश में निकल रहा है। और शायद वह पहले ही डैन के पास आने की कोशिश कर चुका था और अब वह कहीं और जा रहा था।

वैसे भी, वह उन्हें बताता है कि डैन ने मेरे लिए बहुत अच्छा किया है और उसने मेरे साथ अच्छा व्यवहार किया है। श्लोक 4, और इसलिए उन्होंने कहा, ठीक है, ठीक है, यदि आप पुजारी बन गए हैं, तो हम जानना चाहेंगे, यदि आप भगवान से पूछेंगे कि क्या हम जिस यात्रा पर हैं वह सफल होगी। और इसलिए, पुजारी ने उन्हें उत्तर दिया, श्लोक 6, हाँ, सब कुछ ठीक हो जाएगा।

आपको शांति मिले। यात्रा होने वाली है, की दृष्टि के तहत वे चले गए और वे लैश नामक स्थान पर आए। अब यह पता चला है कि लैश, लेशेम नाम का ही दूसरा रूप है।

तो मूलतः, वही शहर। लैश शब्द का उल्लेख उत्पत्ति की पुस्तक में बाद के शहर डैन के प्रारंभिक नाम के रूप में किया गया है। तो उत्पत्ति का वह भाग सदियों बाद की घटनाओं को भी दर्शाता है।

लेकिन हमारे यहां इसे लैश कहा जाता है, जोशुआ में इसे लेशेम कहा जाता है। वे वहां पहुंचे और उन्होंने इसे रहने के लिए एक अद्भुत जगह के रूप में देखा। वे सीदोनियों की रीति के अनुसार शांति और सुरक्षा में रहते थे, शांत और निडर, किसी भी चीज़ की कमी नहीं।

यह श्लोक 7 है, धन का स्वामी होना। वे सीदोनियों से किस प्रकार दूर थे, और उनका उन से कोई वास्ता न था। सिदोनियन सुदूर उत्तर में तट पर थे, लेकिन यह एक ऐसा स्थान है जहां बहुत अधिक संघर्ष नहीं है।

और उन्होंने फैसला किया कि वे वहीं बसना चाहेंगे। इसलिए, वे वापस आते हैं और अपने भाइयों को इस अद्भुत जगह के बारे में बताते हैं और वे इसे लेने जा रहे हैं। तो, श्लोक 11 में, दानियों ने 600 हथियारबंद लोगों को ऊपर जाने और क्षेत्र पर कब्ज़ा करने के लिए भेजा है।

और वे यहूदा में किर्यत्जीराम नामक स्थान पर, जो सुदूर दक्षिण में है, बस गए। इसे महाने दान कहा जाता है। महाने शिविर के लिए शब्द है, इसलिए दान का डेरा एक प्रकार का है।

लेकिन वे उत्तर की ओर आगे बढ़े। एप्रैम फिर मीका के घर लौट आया। और वे पाँच आदमी जो पहले बाहर गए थे, पद 14 में अपने भाइयों से कहते हैं, क्या तुम जानते थे कि यहाँ मीका के घर में सचमुच अच्छा सामान है? एपोद, घरेलू देवता, नक्काशीदार छवि, धातु छवि।

तो, इस बारे में सोचें कि आप इसके बारे में क्या करना चाहेंगे। यह मूलतः वही है जो वे पूछ रहे हैं, जो वे आपको श्लोक 14 में बता रहे हैं। और इसलिए, वे एक तरफ चले गए, वे वहाँ आए और उनसे कल्याण के बारे में पूछा और 600 लोग आए, बल्कि केवल घर के लिए धमकी देने लगे। एक व्यक्ति।

और इस प्रकार, पद 17, वे पाँच मनुष्य जो देश का पता लगाने को निकले थे, आए और ये वस्तुएं, नक्काशीदार मूर्तें, एपोद, गृहदेवता, धातु की मूर्तें ले गए। सभी पुजारी द्वार के द्वार पर खड़े थे। तो आप एक आधुनिक माफिया जैसी फिल्म की कल्पना कर सकते हैं, जिसमें आपके चारों ओर सभी ताकतवर लोग, मुस्लिम पुरुष हैं, और फिर कोई इसे लेने जाता है।

और आप बस इतना जानते हैं कि पीड़ित असहाय हो रहे हैं। यहाँ वह आदमी खड़ा है, जो यह सुनिश्चित कर रहा है कि ऐसा हो। इस तरह, लेकिन चोट पर अपमान जोड़ने के लिए, मीका की चीज़ों को लेने के अलावा, जिसे उसने अपनी माँ के पैसे से बहुत प्यार से इकट्ठा किया था और इसी तरह, चोट पर अपमान जोड़ने के लिए, वे कहते हैं कि वे उसके याजक को छीन लेना चाहते हैं, इस लेवी को ले जाओ उन्हें।

और इसलिए, वे पुजारियों से पूछते हैं, पुजारी, सबसे पहले, कहते हैं, आप यहाँ पद 18 में क्या कर रहे हैं? और उन्होंने कहा, चुप रहो। हमारे साथ आओ। हमारे लिये पिता और पुरोहित बनो।

क्या आपके लिए यह बेहतर है कि आप एक आदमी के लिए पुजारी बनें या पूरी जनजाति के लिए? और इसलिए, मुझे लगता है कि आप कह सकते हैं कि वह एक प्रकार की उन्नति के कैरियर पथ का अनुसरण करता है जिसे अब एक बड़ी कंपनी में पदोन्नत किया गया है। और याजक का मन प्रसन्न हुआ। उसने एपोद और गृहदेवताओं, और खुदी हुई मूर्तों को लिया, और लोगों के साथ चला गया, पद 20।

और वे पीछा करने लगे, और उत्तर की ओर चले गए। उस आदमी, मीका को यह पसंद नहीं है। और उसे एहसास होता है कि क्या हो रहा है।

और वह उनके पीछे चिल्लाता है। और श्लोक 24 में वह कहता है, तुम मेरे देवताओं को जो मैं ने बनाए हैं ले लो, और याजक चले जाओ। और मैंने क्या छोड़ा है? फिर तुम कैसे पूछते हो, मुझे क्या हो गया है? और दानियों ने कठोर शब्दों में जवाब देते हुए कहा, बेहतर होगा, आप शांत रहें।

अन्यथा, आप अपने परिवार के जीवन के साथ-साथ अपना जीवन भी खो देंगे, पद 25। इसलिए, दानी लोग उत्तर की ओर पलायन करते हैं। मीका का आदमी देखता है कि वे बहुत ताकतवर हैं।

वह घर वापस चला जाता है। पद 27, दानियों ने वह सब ले लिया जो मीका ने बनाया था। याजक लैश नामक स्थान पर आया, जो उत्तर की ओर है।

यह एक शांत और संदेह रहित जगह है। और दानियों ने बड़े ही क्रूर ढंग से उन पर आक्रमण किया, और उन्हें तलवार से मार डाला, और नगर को जला डाला। और लैश शहर के लिए कोई बचाव नहीं है।

और इसलिए, उन्होंने शहर का पुनर्निर्माण किया। दानियों ने किया। श्लोक 29 में, उन्होंने अपने पूर्वज के नाम पर शहर का नाम दान रखा।

शहर को मूल रूप से लैश कहा जाता था, जैसा कि हमें पद 29 में बताया गया था। और उन्होंने खुदी हुई मूर्ति को अपने लिए स्थापित किया। और योनातान नाम एक मनुष्य, जो गेशोम का पुत्र और मूसा का पोता था, और उसके पुत्र उस देश के बन्धुवाई के दिन तक दानियों के गोत्र के लिथे याजक थे।

अब, यह एक संकेत है कि ऐसा पहले न्यायाधीशों के काल में हुआ होगा क्योंकि ऐसा लगता है कि यह मूसा का पोता है। अगर ऐसा है, तो सैकड़ों साल बाद ऐसा नहीं हो रहा है। यह संभवतः इस अवधि के आरंभ में हो रहा है।

परन्तु ये लोग, मूसा के वंशजों का यह समूह, दानियों के गोत्रों के लिए याजक के रूप में कार्य करते हैं। अब, फिर, ये वैध पुजारी नहीं हैं। सभी वैध पुजारी लेवी जनजाति से थे, और वे मिलापवाले तम्बू की पूजा के आसपास केंद्रीकृत थे।

यहाँ, यह एक जनजाति के लिए एक निजी सेट है। यह निश्चित रूप से कानून में बिल्कुल भी स्वीकृत नहीं है। लेकिन जाहिरा तौर पर, यह तब तक जारी रहा, जैसा कि हम श्लोक 30 के अंत में देखते हैं, भूमि की कैद के दिन तक।

और यह सदियों बाद, 500 के दशक में होगा, जब बेबीलोनियों ने इस्राएलियों को यरूशलेम से बेबीलोनिया की भूमि पर निर्वासन में ले लिया था। तो, यह कई सदियों से है कि दानियों ने अपनी भूमि में जनजातियों के लिए यह निजी व्यवस्था की है, और इसकी जड़ें इस एक व्यक्ति, मीका की इच्छा में हैं, कि उसका अपना छोटा निजी मंदिर और उसके साथ सहायक वस्तुएँ हों, और एक परिचर पुजारी। इसलिए, नैतिक और आध्यात्मिक रूप से हम पहले से भी निचले स्तर पर हैं।

इससे पहले कि भगवान यहां शामिल हो, भगवान कुछ भी नहीं बोलते हैं। हमारे सबसे करीब मीका की मां हैं, जो मंदिर को भगवान को समर्पित करना चाहती हैं, लेकिन फिर वह ये खुदी हुई छवियां बनाती हैं। तो, सैमसन की कहानी के अंत में, याद रखें जब उसके बाल काटे गए थे, तो यह कहा गया था कि भगवान ने उसे छोड़ दिया था, या भगवान उसके साथ नहीं था।

वह यहां जारी है. भगवान इस कहानी का हिस्सा नहीं है. और यह एक उलझी हुई कहानी है, लेकिन हर जगह पूजा की विकृत कहानी है, मीका और उसके परिवार के खिलाफ, लैश के लोगों के खिलाफ विभिन्न स्तरों पर बर्बरता की जा रही है।

और यह आने वाले अध्यायों में और भी बदतर कहानी के लिए मंच तैयार करता है।

यह डॉ. डेविड हॉवर्ड रूथ के माध्यम से जोशुआ की पुस्तकों पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 29, न्यायाधीश 17-18, पहला परिशिष्ट, मीका और लेवी है।